







संपादकीय

## फोटो और फोटोग्राफी

तस्वीर को हकीकत में बनाने का श्रेय फ्रेंच वैज्ञानिक जोसेफ नाइसफोर और लुइस डॉगेर को ही जाता है। इन्होंने डॉगेरोटाइप प्रक्रिया का अविष्कार 1820 के करीब किया था। यह फोटोग्राफी की सबसे पहली प्रक्रिया है। इसकी मदद से ही दुनिया का पहला तस्वीर 1826 में कैचर की गई। पहली तस्वीर लेने में 8 घंटे लगे थे। इसे जोसेफ नाइसफोर ने अपने घर की खिड़की से लिया था। 1855 में जेम्स कलर्क मैक्सवेल द्वारा सुझाए गए तीन-रंग विधि द्वारा बनाई गई। पहली रसीदी तस्वीर, 1861 में थॉमस सटन द्वारा ली गई थी। विधय एक रंगीन रिवन है, जिसे आमतौर पर टार्टन रिवन के रूप में वर्णित किया जाता है। पहला रिफ्लैक्स कैमरा 1928 में टीएलआर के रूप में आया। यह काफी पॉयुलर हुआ। सन् 1933 में एसएलआर का डिजाइन बनना शुरू हुआ, जिसमें 127 रॉलफिल्म लगी हुई थी। 3 साल बाद 135 फिल्म्स के साथ एक नया मॉडल आया। मोबाइल फोन ने फोटोग्राफी कला का विस्तार किया है। आम जनमानस की सोच इनमें दिखती है। हर फोटो कुछ कहती है। चित्र जनसंप्रेषण के सशक्त माध्यम होते हैं। चित्रों की प्रमाणिकता को साबित करने की जरूरत नहीं पड़ती। चित्र खुद-ब-खुद प्रमाण होते हैं। चित्र मनव की साँदर्यानुभूति की विशिष्ट प्रस्तुति भी होते हैं। प्राचीन काल से ही मनुष्य ने अपने भावों को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। विधि प्रारंगितिहासिक और प्राचीन कालीन गुफा तथा भित्तिचित्र इसके सशक्त उदाहरण है। मनुष्य जीवन और प्रकृति से जुड़ी जिन उपरिथिति को देखता है और जो उन्हें आकर्षित करती है, उसे वह चित्रों के रूप में उतार लेता है। चित्रकारी मानव की मूल प्रवृत्ति रही है। लेकिन सजीव फोटो उत्तरने का काम कैमरे की मदद से किया जाता है। फोटो जीवंत इतिहास होते हैं। मानव की साँदर्यानुभूति को सहेज कर रखने का काम करते हैं। फोटो को शब्दों का विकल्प भी कहा गया है। एक फोटोग्राफ एक हजार शब्दों की व्याख्या कर देता है। चित्र अभिव्यक्ति का ऐसा साध्यम है, जहां शब्दों की जरूरत नहीं होती। तस्वीर एक साथ कहानी कहने और गवाही देने का कार्य करती है। कभी-कभी जिंदगी से जुड़े चित्र इतनी गहरे मन में उतार जाते हैं कि व्यक्ति सोचने पर विवश हो जाता है। हमें संसार के बारे में गहराई से सोचने पर मजबूर कर देते हैं। कैमरा तस्वीर खींचने में क्षम्भ भर ही तो लगता है। कितना सत्यवादी होता है। जैसा देखता है वैसा ही फोटो लेता है। आपकी आँखों से देखता है और आपके मरिंटाक की सोची हुई बात को अकित करता जाता है। उसे दुख-सुख, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब, सुंदर-कुरुप का बिल्कुल ही भान नहीं होता। तस्वीरें भी कैमरे की तरह कभी झूठन ही बोलती हैं। अपनी कहानी खुद कहती है। केवल वर्तमान की ही नहीं वरन् भूत और भविष्य की भी कहानी कह देती है। तस्वीर कभी बोलती नहीं, चाहे जितनी भी जीवंत प्रतीत हो। जीवित हो या मृत, हर दृष्टि से तस्वीर संदेव निर्जीव ही है। जीवित या मृत व्यक्ति के छायाचित्र में कोई अंतर नहीं होता। दोनों ही रिश्ति में छायाचित्र हमेशा मुक्त, अविचल और स्थित होता है। तस्वीर केवल सुख ही नहीं बल्कि दुख के क्षणों को भी स्मरण करा देती है। यदि छाया चित्र बोलता है सांत्वना देता है, वह केवल तस्वीर देखने वाले व्यक्ति की खुद की सोच पर निर्भर करता है। फोटोग्राफी विशिष्ट कलात्मक विद्या है जो अतिरिक्त सतर्कता और त्वरित निर्णय क्षमता की मांग करती है। कैमरे के माध्यम से भावना को आंदोलित कर सकने वाले लक्षणों को केंद्र करना आसान काम नहीं है। एक सजीव फोटोग्राफ पाने के लिए अनेक चित्र खींचना पड़ता है। इंतजार करना पड़ता है। इसलिए फोटोग्राफर के लिए धैर्यवान होना अत्यंत आवश्यक है। सही चित्र को उसके आकर्षक रूप में प्राप्त करने और प्रस्तुत करने के लिए तकनीकी दक्षता तथा रंग, प्रकाश का ज्ञान भी फोटोग्राफर के लिए जरूरी है। फोटो समाचार पत्र को आकर्षक तथा विश्वसनीय बनाते हैं। फोटो प्रामाणिक इतिहास होते हैं। वीते हुए समय के चित्र से जीवंत और विश्वसनीय प्रमाण और कुछ भी नहीं हो सकता। चित्रों की अपनी भाषा होती है जिसको समझने के लिए किसी संकेत चिन्ह की जरूरत नहीं पड़ती। चित्र अपने आप में मानवीय अनुभूति को उद्देलित कर उसकी भावुकता को प्रवाह देने में सक्षम होते हैं। समाचारों की दृष्टि से चित्रों का विशेष महत्व होता है। फोटो समाचार की विश्वसनीयता और जीवन्तता को बढ़ाते हैं। विवादास्पद बातों पर फोटो द्वारा की गई अभिव्यक्ति निर्णयक होती है। पाठक फोटो युक्त समाचार को ज्यादा सुगमता पूर्वक ग्रहण करते हैं तथा यह उनके मरिंटाक पटल में अपेक्षाकृत नीर्देश अवधारणा सम्भव नहीं है।

इसरो ने एक के बाद  
एक बड़ी उपलब्धि  
हासिल की है।  
चंद्रयान-3 अगर चांद के  
सतह पर सफलतापूर्वक  
उत्तर जाता है तो यह एक  
और महान उपलब्धि  
होगी। चंद्रयान-3 के  
बाद अब इसरो अपना  
सोलर मिशन लांच करने  
का तऱा़त है।

# लालकिले से उभरी विकसित भारत की तरखीर

“ आजादी के शुभदिवस पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने उद्बोधन में विकसित भारत की तस्वीर प्रस्तुत की। प्रधानमंत्री के उद्बोधन का विरेशी दल भले ही कटु आलोचना करें। लेकिन एक आम भारतीय की नजर से देखें तो उसे प्रधानमंत्री के भाषण में एक विकसित भारत साफ तौर पर दिखाया देता है। और इसकी ठोस वजह है प्रधानमंत्री मोदी के पिछले नौ साल की उपलक्ष्यां और उनकी कार्यप्रणाली। प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक नये, विकसित और सशक्त भारत के निर्माण में दिन-रात जुटे हुए हैं। ऐसे में आम भारतवासी उनके शब्दों और वायदों पर पूरा भरोसा करता है। 77वें संसद दिवस पर लालकिले से देशवासियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने दो महत्वपूर्ण लक्ष्य तय किए और उनकी घोषणा की। एक, आजादी के 100 साल बाद 2047 में भारत 'विकसित राष्ट्र' होगा। दूसरा, आगामी 5 साल में जो फैसले लिए जाएंगे और काम किए जाएंगे, उनका असर 1000 साल तक रहेगा। लक्ष्यों के मद्देनजर प्रधानमंत्री ने देश की जनता से मदद मांगी और आशीर्वाद दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से विकास का रोडमैप भी बताया और ये भी कि अर्थव्यवस्था का तेज विकास किस तरह होगा। उन्होंने ने किसान से लेकर गरीब तक, महिलाओं से लेकर मणिपुर हिंसा तक, समय से पहले नए संसद भवन के निर्माण का भी उल्लेख किया और कहा

कि ये नया भारत है। ये संकर्यों से भरा भारत है। पीएम मोदी ने कहा कि आर्थिक शक्ति बढ़ी है तो हमारी सामरिक शक्ति को भी नई ताकत मिली है। उन्होंने सेना को युद्ध योग्य बनाने के लिए निरंतर रिफॉर्म का उल्लेख किया और बम धमाके की घटनाओं का जिक्र भी। प्रधानमंत्री ने कहा कि सीरियल बम धमाके का जमाना बीती बात हो गई है। आतंकी घटनाओं में कभी आई है, परिवर्तन का वातावरण बना है। उन्होंने 2047 तक विकसित भारत बनाने का सपना लेकर चलने की बात कही और ये भी कहा कि हमें राष्ट्रीय चरित्र के लिए और बल देते हुए आगे बढ़ना होगा। पीएम मोदी ने कहा कि भारत एक निर्णायक मोड़ पर है और इसमें कोविड महारासी के बाद उभर रही नयी विश्व व्यवस्था को आकार देने की ताकत है। उन्होंने देशवासियों को अगले पांच वर्षों में उज्ज्वल भविष्य के साथ 'नए भारत' का आश्वासन भी दिया। उन्होंने बताया कि कोविड के बाद देश और दुनिया में काफी बदलाव देखने को मिले हैं। प्रधानमंत्री के संबोधनों में राजनीतिक संदेश भी छिपे रहते हैं। हो सकता है कि इस बार के संबोधन में आगामी लोकसभा चुनाव की दिशा में कोई संकेत छिपा हो। पिछले साल खत्मतांत्र दिवस पर, प्रधानमंत्री मोदी ने पंच प्रण की घोषणा की थी। उन्होंने देशवासियों से 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने, आपसी मानसिकता के फिरी भी संकेत को समाप्त करने, भारत की धरोहर पर गर्व करने, एकता की शक्ति को मजबूत

करने और ईमानदारी के साथ नागरिक कर्तव्यों को पूरा करने की अपील की थी। 2014 में लाल किले की प्राचीर से पहले स्वतंत्रता दिवस के भाषण में उन्होंने स्वच्छ भारत और जन धन खातों जैसे कई नए कार्यक्रमों की घोषणा की। 2019 के लोकसभा चुनावों से पहले 2018 में मोदी ने गरीबों के लिए महत्वपूर्ण स्वास्थ्य बीमार्योजना, आयुष्मान भारत शुरू की थी। स्वतंत्रता दिवस पर अपने संबोधनों में, उन्होंने 2019 में चौथे ऑफ डिफेंस स्टाफ पद की स्थापना, 2021 में आजादी का अमृत महोस्तव मनाने जैसे महत्वपूर्ण ऐलान किए। गति शक्ति योजना और 75 वर्दे भारत एक्सप्रेस की शुरुआत की घोषणा भी लाल किले से हुई। प्रधानमंत्री के उद्घोषन के संबंध में उद्योग जगत के अहम लोगों का मनान है कि, भारत को तीसरी सबसे बड़ी वैशिक कर्तव्यवस्था बनाने का प्रधानमंत्री का संकल्प अगले पांच वर्षों में आसानी से साकारा हो जाएगा। विशेषज्ञों के अनुसार प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में जिन उपलब्धियों और लक्षणों का उल्लेख किया, उसने वारतवत्व में अमृत काल में अग्रणी वैशिक महाशक्ति के रूप में भारत के उदय के लिए सही पृष्ठभूमि बनाने की तैयार की है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत ने निश्चित रूप से समानता के साथ स्वच्छ ऊर्जा, वैशिक शान्ति और समृद्धि जैसे कई परिवर्तनक कार्यों में दुनिया का नेतृत्व करने की पहल की है। पीएम मोदी ने भ्राताचार, परिवार-आधारित परिट्यों और तुष्टीकरण को भारत की राजनीतिक व्यवस्था, शासन और

विकास को प्रभावित करने वाली तीन बुराइयां बताईं। उन्हें ने भट्टाचार्य जैसा मजबूत और कैद मुद्दा उठाया। यह असल में ऐसा कैंसर है जिसने हमारे राजनीतिक प्रतिष्ठान को खोखला किया है और शासन व्यवस्था को कमज़ोर किया है। हमारी तरक्की को भी प्रभावित किया है। यह भी सच है कि केंद्र सरकार में शीर्ष स्तर पर भट्टाचार्य कम हुआ है। इसका श्रेय मोदी को जाता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भट्टाचार्य व्यवस्था की जड़ों में मट्टे का काम करता है और मजबूत से मजबूत इमारतों को भी हिलाकर रख देता है। ऐसे में जब भट्टाचार्य पर प्रमाणी रोक लगेगी तो देश के विकास को पंख लगाना तय है। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश ने पिछले नौ सालों में कई उपलब्धियां भी हासिल की हैं। सभी भारतीयों को इन उपलब्धियों पर गहर महसूस करना चाहिए। चंद्रयान, भारत में डिजिटल क्रांति, भारत की एनर्जी बास्केट में अक्षय ऊर्जा का तेजी से विस्तार, भारत के बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण, बैंकिंग क्षेत्र को समावेशी बनाना, जमीनी रस्तर पर महिलाओं के नेतृत्व में विकास, महामारी के दौरान टीकाकरण अभियान, वैराग्य, इसमें कोई शक नहीं है कि इसका श्रेय मोदी सरकार को ही जाता है। तरीके सापे है कि जीवन के हर क्षेत्र में देश तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने लालकिले से घोषणा की है कि वह 2 करोड़ महिलाओं को 'लखपति' बनाएंगे और ग्रामीण रस्त सहायता समूहों को ताकतवर बनाएंगे। यह तो किसी भी विकसित राष्ट्र की बुनियाद है, जिसे अभी बनाने की घोषणा की गई है। प्रधानमंत्री ने

विश्वकर्मा योजना की भी धोणला की है। जो शिल्पकार, मिस्ट्री, स्वर्णकार आदि हाथ और औजार से काम करते हैं, उनकी मदद इस योजना के तहत की जाएगी। बेशक 2047 का लक्ष्य भी 'सप्तनीला' लगता है, जबकि विश्व बैंक ने भारत को फिलाहाल निम्न मध्यम आय वाली श्रीणि में रखा है, क्योंकि हमारी प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय वैश्विक स्तर पर बहुत कम है। विकसित राष्ट्र बनने के मायने ये हैं कि प्रथेक व्यक्ति, नागरिक को आर्थिक अवसर जरूर मिलने चाहिए। यकीनन हमारी 30 साल की उम्र से कम वाली आवादी विश्व में सवाधिक है। वह हमारी ताकत भी है। वह ताकत विकसित अर्थव्यवस्था तथा पैदा कर सकती है, जब बेरोजगारी के मुद्दे को गंभीरता से संबोधित किया जाए। भारत में बेरोजगारी एक वित्तित सरोकार है और इसकी राष्ट्रीय दर करीब 8 फीसदी है। रोजगार के मोर्चे पर और गंभीरता से काम करने की जरूरत लंबे समय से महसूस होती है। विपक्ष की आलोचना और निदा के बावजूद प्रधानमंत्री का लाल किले से बोला गया एक-एक शब्द करोड़ों देशवासियों के भीतर एक नवी ऊर्जा, उमंग और तरया का सचार करता है। और अगर देशवासी विकास की दिशा में सरकार का सहयोग दें और सही दिशा में कदम बढ़ा दें तो किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करना संभव है। और देश के वर्तमान वातावरण से ऐसा आमास होता है कि देश ने आगे बढ़ने का संकल्प मन ही मन ले लिया है और देशवासी उस दिशा में पूरी मजबूती से आगे बढ़ चुके हैं। —स्वतंत्र पत्रकार

# नारी सम्मान की न्यायिक शब्दावली

न्यायिक प्रक्रिया के दौरान नारी का सम्मान बनाये रखें वे लेये सुप्रीम कोर्ट ने नई शब्दावली ही है। अनेक ऐसे शब्द जो नारी की गरिमा को गिराने वाले होते हैं, उसकी बजाय शीर्षक अदालत ने सम्मानजनक शब्द दिये हैं। एक हैंडबुक के जरूरी सर्वोच्च अदालत ने जो शब्द इस्तेमाल में लेने के लिये कहा है आशा है कि अब कवरहरी पहुंचने वाली महिलाओं को न्याय पाने के लिये अपनी प्रतिष्ठा के साथ समझौता नहीं करना होगा। शादी-तलाक, लिव इन रिलेशनशिप, यौन उत्पीड़न, प्रताङ्गना, सम्पत्ति वेवाद होने पर वच्चों की करस्टडी आदि कई तरह के मुकदमों के लिये अपनी प्रतिष्ठा को बनाया प्राथमिकता बन जाता है। पुरुषकर अपनी प्रतिष्ठा को बनाया प्राथमिकता बन जाता है। पुरुषाधान समाज द्वारा रचित महिलाओं की आवास को तार-तार करने वाले कई शब्द, वाक्य और मुहावरे समाज में खूब प्रचलित हो चुके हैं। महिलाओं को संबोधित करने वाले ऐसे रुढ़िवादी शब्दों का अदालत की शब्दावली से हटाकर सुप्रीम कोर्ट ने नये शब्द दिये हैं, उम्मीद की जानी चाहिये कि वे कवरहरी की जिरह और दरतावेजों में ही सीमित न रहकर पूरे समाज में इस्तेमाल होंगे। ताकि औरतों को कोर्ट ही नहीं वरन् पूरे समाज में अपमानित हो न देवा संबोधित होने का मौका मिले। हमारे यहां महिलाओं व इथान के बारे में चाहे जितनी महिमा गाई जाये, सच्चाई यही है कि भारतीय समाज औरतों को वह सम्मान नहीं देता जिसके अभी आवादी हकदार है। बहुत से देशों का भी यह हाल हो सकता है। यह किसी एक धर्म या वर्ग से जुड़ी महिलाओं की भी बात नहीं है। थोड़े से अभ्यास को थोड़े दिया जाये तो ज्ञानात्मक महिलाएं देख

में लैंगिक असमानता का शिकार हैं। फिर वे चाहें निम्न वर्ग की हों या मध्य वर्ग अथवा उच्च वर्ग की। शिक्षा ने कुछ फर्क जरूर डाला है पर असलियत यही है कि ज्यादातर महिलाएं अपने वायाज अधिकारों की तरह ही सम्मान से काफी दूर हैं। पहले पिता या भाई के नियंत्रण में रहती स्त्रियां बाद में पति और अंततःसु बुढ़ापे में पति के साथ रहते हुए या विधिवा के रूप में पुत्रों पर आश्रित जीवन जीती हैं। उनकी भौतिक जरूरतों को लेकर होने वाली दुश्खियां तो अपनी जगह पर हैं, घर से या बाहर, वे आजीवन जिल्लत भरा जीवन जीती हैं। उन्हें जिन शब्दों से संबोधित किया जाता है वह अक्सर अपमानजनक होता है। धरोहर के बाहर की महिलाओं को लेकर कोई बहुत अच्छी भाषा का उपयोग नहीं होता। जो महिलाएं समाज में प्रवर्चित भाषा के चुपचाप सुन लेती हैं वे अच्छी मानी जाती हैं क्योंकि यह मानवता ही चला जाता है कि उनका जीवन इसी के लिये बना हुआ है। यह उनके प्रति ऐसे वाक्यों या शब्दों का प्रयोग गैरवानी कही जाती है फिर, यदि औरत न्याय की दहलीज तक पहुंचने वाली हो तो पुरुष का अहम अधिक आहत होता है। ऐसी औरतों के लिये कटुतर व ज्यादा अपमानजनक शब्द प्रयोग में लाये जाते हैं। ऐसे शब्द लोक व्यवहार से चलकर कानूनी प्रक्रिया में दाखिल हो गये हैं। रुदिवादी भाषा महिला को उसके हक की लड़ाई में कमज़ोर कर देती है। औरतों को अपमानित करने वाला कानूनी दांव-पेंच शब्दों तक सीमित न रहकर महिला के विचारों और पोशाकों तक पहुंच जाता है। बलात्कार से पीड़ित महिला को इंसाफ पाने या दिलाने के लिये दामिनी मूरी की तरह उस पीड़िदादी घटना का सिलसिलेवार वर्णन करना होता है जो बलात्कार से कहीं अधिक दर्दनाक होता है या फिर श्पैष्कृष्ण फिल्म की भाँति महिला

जाता है। सुप्रीम कोर्ट ने भारत को सम्यक समाज बनने के रास्ते पर एक और कदम चलाया है। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा तैयार की गई एक हैंडबुक बुधवार को जारी की। इसका उद्देश्य महिलाओं के लिये प्रयोग में लाये जाने वाले शब्दों पर रोक लगाना है। इस मौके पर उन्होंने कहा कि इससे जजों और वकीलों को लैंगिक रुढ़िवादी शब्दों के इस्तेमाल से बचने में सहायता मिल सकेगी। हैंडबुक में दिये गये शब्द अब से अदालतों में जिरह करने के दौरान और उनके फैसलों में उपयोग में लाये जायेंगे। अनेक ऐसे शब्दों को वर्जित कर महिलाओं के लिये सम्मानजनक जो शब्द इस हैंडबुक में बताये गये हैं, उनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं— अब तक प्रचलित प्रारिष्टट्यूट, हूकर या रंडी के स्थान पर सेक्स वर्कर, अडल्ट्सेस या अफेयर (व्यभिचारिणी) की बजाय शादी से इतर संबंध तथा हाउस वाइफ के बदले श्होममेकर शब्द का इस्तेमाल होगा। ऐसे ही, कैरियर वूमन, इंडियन या वेस्टर्न वूमन, पवित्र महिला, स्लट या फूहड़ के स्थान पर केवल शमिला शब्द का प्रयोग होगा। बिन व्याही मां को श्मांश तथा कीप या मिस्ट्रेस को शैगर मर्द से संबंध कहना होगा। बाल वेश्या को ऐसी बच्ची जिसकी तस्करी की गई, जन्म से लड़का—लड़की के स्थान पर इजन्म के समय निर्दिष्ट लड़का या लड़की, स्ट्रैन (जब अपमान के उद्देश्य से इस्तेमाल में लाया गया हो) के बदले लिंग तटरथ शब्द जैसे आत्मविश्वासी या जिम्मेदार लफजों का प्रयोग होगा। भड़काऊ कपड़े केवल कपड़े कहे जायेंगे और ये महिला की इच्छा के द्योतक नहीं होंगे। उनकी ना का अर्थ ना ही होगा। आशा है कि महिलाओं को जो समान शीर्ष अदालत दिलाना चाहता है वह सिर्फ मुकदमों की जिरह, सुनवाई और फैसलों में ही सीमित न रहे। कोर्ट परिसरों के बाहर भी समाज औरतों को वास्तविक समान देगा ताकि हम लैंगिक समानता से युक्त समाज रच सकें। कोर्ट द्वारा दिखाया गया नारी समान का रास्ता आम लोगों को कुछ तो सिखायेगा।

# चांद के बाद अब सूर्य पर नजर

हमेशा अंतरिक्ष, चांद के प्रति जिज़ासू रहा सने हमेशा ही अपनी को शांघ करने के द संधान जारी रखा। वाद से अब तक अंतरिक्ष का सफर तरीके से तय किया केल व बैलगड़ी से हमारी अंतरिक्ष यात्रा चांद तक पहुंच गई सका श्रेय देश के बान और काविल और तकनीकी विशेषज्ञों है। आज भारत मानव इस में भेजने की तैयारी है लेकिन यह यात्रा सान नहीं थी। साल जब देश आजाद हुआ इन्हीं करुण थी कि खाने के लिये पर्याप्त

कल्पना करना तो बहुत दूर की बात थी लेकिन हम साहस के साथ सभी चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ते रहे। अंततः इस साल 1962 में वह घड़ी आई जब भारत ने अंतरिक्ष का सफर करने का फैसला किया और देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति की स्थापना की। इससे के बैचानिकों ने तमाम बाधाओं के बावजूद भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को दुनिया में शीर्ष पर पहुंचा दिया है। अब यह आकाशीय घटनाओं और जीवन के अध्ययन के करीब पहुंच रहा है। साल 1969 में इस इन्डो-रेस्पार ने श्वारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन रेस्पार की रूप धारण कर लिया। इससे इन्होंने एक नई अंतरिक्ष से एक है। इससे भारत की अंतरिक्ष चुनौती है। इससे ने एक बड़ी उपलब्धियाँ हैं। चंद्रयान-3 आसानी से तारा है तो यह एक उपलब्धियाँ होगी। इससे के बाद अब इससे भिन्न लांच करने भारत का पहला सूर्योदय यानी सूर्य की स्टॉर्क रेस्पेसक्राफ्ट आदित्य लॉन्चिंग सिटम्बर 2024 को अनुसार इससे को सूर्य-पृथ्वी प्रणाली में लैंगें ज प्लाइंट आसापास एक प्रभावी रूप से अंतरिक्ष में स्थापित किया जाएगा। इससे ने एक नई अंतरिक्ष से एक है।

एजेंसियों में गो के चलते में धाक बन एक के बाद हासिल की गय चांद की पार्पुर्क उत्तर न और महान चन्द्रयान-३ अपना सोलर जा रहा है। सोलर मिशन गो करने वाले ये-एल1 की तरफ में होगी। अंतरिक्ष यान गोली के पहले (एल1) के मांडल कक्षा आएगा। एल1 उपग्रह बिना को देख सकेगा। सूर्य के केंद्र से पृथ्वी के केंद्र तक एक सरल रेखा खींचने पर जहां सूर्य औं पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बराबर होते हैं, वह लैग्रेंज बिंदु कहलाता है। सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल पृथ्वी के तुलना में काफी अधिक इसलिए अगर कोई वस्तु इसे रेखा के बीचों-बीच रखी जाती है तो वह सूर्य के गुरुत्वाकर्षण द्वारा उसमें समा जाएगी। लैग्रेंज बिंदु पर सूर्य और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल समान रूप से लगने से दोनों का प्रभाव बराबर हो जाता है। इस शिथियां में वस्तु को न तो सूर्य अपने ओर खींच पाएगा, न पृथ्वी अपने ओर खींच सकेगी और वस्तु अधिक में लटकी रहेगी। लैग्रेंज बिंदु को एल-१, एल-२, एल-३ आदि भी कहा जाता है।

मानव निर्मित उपग्रहों और अन्तरिक्षियानों को बचाने के उपायों के बारे में पता लगाया जा सकेगा। यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) के अनुसार वह इसरो के अगले इंटरप्लेनेटरी मिशन – सौर मिशन आदित्य एल1 के लिए ट्रैकिंग सहायता प्रदान करेगी। आदित्य-एल1 का नाम हिंदू सूर्य देवता और अंतरिक्ष यान के भविष्य के घर के नाम पर रखा गया है। वहीं एल1 – पृथ्वी–सूर्य प्रणाली का पहला लैंग्रेज बिंदु है। ईएसए ने कहा, यह कई गुणों का अध्ययन करेगा, जैसे कि कोरोनल मास इजेक्शन की गतिशीलता और उत्पत्ति। आदित्य के प्रक्षेपण के बाद निसंदेह अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की दखल और बढ़ जाएगी। सूर्य मिशन बहुत महत्वपूर्ण है।





आरबीआई ने लोन अकाउंट्स पर जुर्माना लगाने के नियम बदले, अब लोगों ने सिर्फ 'उचित' दंडात्मक शुल्क

मंबई/नई दिल्ली। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने लोन अकाउंट्स पर जुर्माना लगाने के नियमों में बदलाव किया है। आरबीआई ने इसको लेकर संबंधित नियम जारी किया है। रिजर्व बैंक के एने नियमों के तहत कर्ज भुगतान में चुक्के के मामले में अब बैंक संबंधित ग्राहक पर सिर्फ 'उचित' दंडात्मक शुल्क ही लग सकता। आरबीआई ने बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एसीएफसी) के दंडात्मक व्याज को लेकर अधिसूचना जारी की है। रिजर्व बैंक ने 'उचित ऋण व्यवहार-कर्ज खातों पर दंडात्मक शुल्क के बारे में जारी अधिसूचना के मुताबिक बैंक और अन्य ऋण संस्थाओं को एक जनवरी, 2024 से दंडात्मक व्याज लगाने की अनुमति नहीं होगी।

अधिसूचना के मुताबिक कर्ज लेने वाले व्यक्ति द्वारा ऋण अनुबंध की कोशी का अनुपालन नहीं करने पर उसने दंडात्मक शुल्क के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति पर चिंता जारी है। आरबीआई की अधिसूचना के मुताबिक दंडात्मक शुल्क का कोई पूँजीकरण नहीं होगा। ऐसे शुल्कों पर अतिरिक्त व्याज की गणना नहीं की जाएगी। अभी बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एसीएफसी) दंडात्मक व्याज को बैंक अग्रिम पर वसूली जाने वाली व्याज दरों में जोड़ देते हैं। हालांकि, रिजर्व बैंक के ये नियंत्रण क्रेडिट कार्ड, बाह्य वाणिज्यिक कर्ज, व्यापार क्रेडिट आदि पर लागू नहीं होंगे।

अशिवनी वैष्णव ने बैंगलुरु में भारत के पहले 3 डी-मुद्रित डाकघर भवन का किया उद्घाटन

नई दिल्ली। केंद्रीय सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अशिवनी वैष्णव ने बैंगलुरु में भारत के पहले 3 डी-प्रिंटिंग तकनीक से निर्मित डाकघर का उद्घाटन किया। 1100 वर्ग फुट के 3 डी-प्रिंट डाकघर भवन का उल्लंघन बैंगलुरु के पास कैम्बिज लैन्डार्ट में किया गया है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पिछले जौ वर्ष में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश नई नई प्रौद्योगिकीय विकासित की है। इसी के तहत 3 डी-प्रिंटेड इमारत का निर्माण एक महत्वपूर्ण पहल है। अशिवनी वैष्णव ने अगे कहा कि यह सब इसलिए संभव है, क्योंकि देश के पास एक ऐसा नेतृत्व है जो नियंत्रण के अंतर्गत है और उसे हमारे लोगों की क्षमताओं पर भरोसा है।

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री वैष्णव ने कहा कि यह शहर हमेस्थ भारत की एक नई तत्वावार्द्ध पेश करता है। वैष्णव ने कहा कि इस 3 डी-प्रिंट डाकघर भवन की नई तस्वीर ही आज भारत की भावाना है, जिसके साथ देश आज प्रगति कर रहा है।

रुपया फिर रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंचा, बढ़ेगी महंगाई और विदेश में पढ़ाई का खर्च

नई दिल्ली। डॉलर की तुलना में रुपये का लुढ़कना जारी है। यह लागतार दूसरे दिन एक ऐसे की गिरावट के साथ रिकॉर्ड निचले स्तर 83.10 पर बंद हुआ। इस गिरावट से जहां महंगाई बढ़ी है, वहीं विदेशों में भी महंगी होती है। विश्लेषकों के मुताबिक, ग्राहकों को कुछ उत्पादों पर ज्यादा खर्च करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है, क्योंकि रुपये की गिरावट से आयात महंगा हो जाएगा। आयातित वस्तुओं और सेवाओं की बढ़ती लागत से रुपये में गिरावट से महंगाई पर दबाव पड़ता है। आयातित वस्तुओं की कोमतों में बढ़ि से कंपनियों को ग्राहकों पर बढ़ोत्तरी का समाप्त होने से विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

जवाकिंचंगी 50 रुपये टक्कर 59,250 रुपये पर आग पर जवाकिंचंगी 50 रुपये महंगी होकर 10 ग्राम पर जवाकिंचंगी 50 रुपये महंगी होकर 10 ग्राम पर गिरावट के लिए मजबूर होना पड़ सकता है, क्योंकि रुपये की गिरावट से आयात महंगा हो जाएगा। आयातित वस्तुओं और सेवाओं की बढ़ती लागत से रुपये में गिरावट से महंगाई पर दबाव पड़ता है। आयातित वस्तुओं की कोमतों में बढ़ि से कंपनियों को ग्राहकों पर बढ़ोत्तरी का समाप्त होने से विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

देश के लिए जब देश के लिए अन्य उत्पादों की बढ़ती लागत होती है, तो विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

देश के लिए जब देश के लिए अन्य उत्पादों की बढ़ती लागत होती है, तो विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

देश के लिए जब देश के लिए अन्य उत्पादों की बढ़ती लागत होती है, तो विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

देश के लिए जब देश के लिए अन्य उत्पादों की बढ़ती लागत होती है, तो विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

देश के लिए जब देश के लिए अन्य उत्पादों की बढ़ती लागत होती है, तो विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

देश के लिए जब देश के लिए अन्य उत्पादों की बढ़ती लागत होती है, तो विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

देश के लिए जब देश के लिए अन्य उत्पादों की बढ़ती लागत होती है, तो विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

देश के लिए जब देश के लिए अन्य उत्पादों की बढ़ती लागत होती है, तो विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर रहा। इससे पिछले हफ्ते कुल विदेशी मुद्रा भंडार 2.42 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 601.45 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी अकड़ों में बताया कि 11 अगस्त को सामान होने से विदेशी मुद्रा भंडार 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर बढ़कर 602.161 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले

देश के लिए जब देश के लिए अन्य उत्पादों की बढ़ती लागत होती है, तो विदेशी मुद्रा भंडार 11 अगस्त को सामान होते में 70.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 602.161 अरब ड

# इंगित कथा गोष्ठी हुई हृदयस्पर्शी कहानियों की प्रतीति



महेन्द्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे गवालियर मध्यभारतीय हिन्दी साहित्य सभा विसिनी की मसिक -इंगित कथा गोष्ठी- गत दिवस साहित्य सभा भवन दौलतगंज, लखर, गवालियर में आयोजित की गई । कार्यक्रम में बहुत ही सुंदर सदस्यों पर प्रेक्ष एवं मरमेश्वर से

कहानियों का वाचन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रिसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार डॉ. सुरेश सप्तार, मुख्य अतिथि डॉ. रमेश त्रिपाठी + मधुंद+ , विशिष्ट अतिथि वनव भट्टनाराय तथा साहित्य सभा के प्रतिनिधि के रूप में सभा के प्रचार प्रसार मंत्री रामचरण

चिराड +राजिं + मंचसंवान रहे । कार्यक्रम संसोक दिलीप मिश्र रहे। सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्ञवलित कर माल्यांगन किया गया। सरस्वती बंदना वर्षित साहित्यकार राज किशोर वाजपेयी+ अभ्यास ने प्रस्तुत की। अतिथियों के स्वागत के पश्चात् कार्यक्रम का संचालन कर रहे डॉक्टर कमला शंकर मिश्र ने कथा वाचन हेतु को कथाकारों को आमंत्रित किया। जिसमें रमेश निवार ने+ हिन्दी चीनी भाषा-भाषा ?+ एवं पश्चात्प भरी भी एवं द्विदार्क कहानी प्रस्तुत की। तत्पश्चात् कमला शंकर मिश्र ने+ कटहल+ नामक कहानी, जिसमें एक व्यक्ति द्वारा कटहल की चोरी पर उसे आम जनता द्वारा प्रतावृत्ति किया जाता है। तत्पश्चात् दिलीप मिश्र ने+ सुराही+ नामक कहानी प्रस्तुत करते हुए एक सुराही जो कि+ बाबूलाल लक्ष्मीकांत+ की बात की बाबूलाल सुराही की अन्य भागों पर एक रोचक, प्रेरक एवं हृदयस्पर्शी रही। मुख्य अतिथि डॉ. रमेश चंद्र त्रिपाठी +मधुंद+ +ने+ सर्पण+ नामक कहानी प्रस्तुत की, तत्पश्चात् अध्यक्षता कर रहे डॉ. मुरोश सप्तार ने+ अपने अपने रासां+ नामक कहानी में पात्र बह्यांद, विपिन एवं महिला पात्र डॉक्टर अनामिका के बढ़ते हुए प्रभाव पर एक रोचक कहानी प्रस्तुत की। अन्य सभायी भी साथीय नहीं रहीं। विशिष्ट अतिथि वनव भट्टनाराय ने भी ही कहानी को साराहीया एवं रोचक बताया। इस अवसर पर साहित्य सभा के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित रामचरण +रविंच+ प्रचार- प्रसार

ने+ हैसियत का सबाल + नामक कहानी प्रस्तुत की जिसमें डॉ. अनामिका द्वारा एक दुर्घटना करने व जन बचने की प्रेरक एवं पूर्व में उसी आइ ए एस के पिता द्वारा डॉक्टर अनामिका के पिताजी के साथ किए जाने वाले दुर्घटना जिसमें आइ ए एस अफसर के साथ अपनी बेटी डॉ. अनामिका की शारीरी के प्रतावत पर आइ ए एस के पिता का कठोर दुर्घटना को प्रश्नाप के भाव प्रक्रिया किए गए। कहानी रोचक, प्रेरक एवं हृदयस्पर्शी रही। मुख्य अतिथि डॉ. रमेश चंद्र त्रिपाठी +मधुंद+ +ने+ सर्पण+ नामक कहानी प्रस्तुत की, तत्पश्चात् अध्यक्षता कर रहे डॉ. मुरोश सप्तार ने+ अपने अपने रासां+ नामक कहानी में पात्र बह्यांद, विपिन एवं महिला पात्र डॉक्टर अनामिका के बढ़ते हुए प्रभाव पर एक रोचक कहानी प्रस्तुत की। अन्य सभायी भी साथीय नहीं रहीं। विशिष्ट अतिथि वनव भट्टनाराय ने भी ही कहानी को साराहीया एवं रोचक बताया। इस अवसर पर साहित्य सभा के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित रामचरण +रविंच+ प्रचार- प्रसार



मंत्री, मध्यभारतीय हिन्दी साहित्य सभा ने प्रस्तुत कहानियों पर अपनी अभियन्त्रिक देते हुए अनेक कहानियों में विषय संबंधीय व पश्चात्प के भाव को प्रमुखता से उप्रेषित किया। उन्होंने कहा, साहित्य सभा में प्रस्तुत कहानियों के कला पक्ष एवं भाव पक्ष सभी उत्कृष्ट व सराहीय हो रहे। आज हमें ऐसी ही कहानियों की आवश्यकता है। कार्यक्रम के अंत में सभी का आभार प्रदर्शन डॉ. सुशीरा चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर पी पी सोनी, संपादक एवं पत्रकार, राकेश पांडे, दीपक कौल सहित अनेक गणमान जन श्रीता के रूप में उपस्थित होंगे।

## देवभूमि है भारत : स्वामी मुदितवदनानंद जी स्नेह यात्रा के पांचवें दिन उमड़ी ग्राम वासियों की भीड़



महेन्द्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे गवालियर। सर्व खलविद ब्रह्म के मूल भ्रत के साथ स्थेत्र यात्रा संगीत सम्राट तनसेन की नगरी बेहड में पहुंची जहां पर मध्य प्रदेश जन अधियान परिषद, परंजति योग, जिला योग समिति तथा जिला योग प्रभारी, नवांकुर संसास के नेतृत्व में सरपंच श्री अजमेर सिंह गुर्ज तथा ग्राम



वासियों और बच्चों ने संत श्री स्वामी मुदितवदनानंद का स्वागत किया गया। उनके द्वारा स्वेच्छान में बताया गया कि हम सब एक हैं मिलकर खुशी से रहना चाहिए तथा हम सभी को समाज में समसरता लाने के लिए सामाज के लोगों को प्रेरित करना चाहिए। हम सब क्षम्भि संतान हैं सभी को भाईचारा बनाए रखना चाहिए और यह भारत भूमि देवों की भूमि है कण-कण में देवता हैं। नमार एवं सभी जीव के भीतर भी दिव्य ज्योति है जो ईश्वर है। गवालियर जिले में चल रही खेड़ यात्रा आज चांदे वेद के बाद के बाद गुजराना, घुजराना, रानगवान, जिगनिया, चक गुंधारा, मटकपूरा होते हुए गवालियर वापस पहुंचने वाला में समस्त ग्राम पंचायतों के संपर्च ग्रामवासी जिला योग प्रभारी दिनेस चाकणकर, परंजति योग समिति के श्री जयदयाल शर्मा, जिला योग समिति के अध्यक्ष पुष्पेंद्र शर्मा हार्टफुलनेस के रस्तम मिंह

## मतदाता सूची में नए नाम जोड़ने तथा गलत नाम विलोपित करने का समय 15 दिन और बढ़ाया

0 सांसद सोनी ने प्रकाशों को बताया-बूथ लेवल ऑफिस द्वारा मतदाता सूची में नए नाम जोड़ने तथा गलत नाम को विलोपित करने के कार्य पर्याप्त नहीं दिया जा रहा है।

0 नामजा के सभी प्रदायिकारी 21 अगस्त से 31 अगस्त, 2023 तक नाम जुड़वाने तथा गलत नाम विलोपित करने के लिए जनजागरण अधियान

नी चालाएंगे। नामजा जनाना पार्टी के सांसद सुवीकृती सोनी ने निर्वाचन आयोग से मांग की है कि बूथ लेवल ऑफिस द्वारा मतदाता सूची में नए नाम जोड़ने तथा गलत नाम को विलोपित करने का समय 31 अगस्त के बाद 15 दिन और दूरा हो। श्री सोनी ने बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने विवाह एवं जीवनांश को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' की बात कही है। और वह बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का स्वागत किया गया तथा गलत नाम विलोपित करने का कार्य पर्याप्त करेंगे।

मानव सांसद श्री सोनी ने 'पार्टी ग्रामांश' को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि को बताया कि नामजा गुरुवय अतिथि का